पाठ्यक्रम–**MSKTC-201**

एम०ए० संस्कृत द्वितीय सत्र

वेद

(MSKTC-201)

(ऋक्सूक्तसंग्रह एवं पृथिवीसूक्त)

इकाई 1 से 21

लेखक : डॉ. सरोज कुमारी

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका

इकाई	विषय	पृष्ठ संख्या
1	ऋग्वेद परिचय	3-25
2	ऋग्वैदिक देवता	26-41
3	अग्निमारुत सूक्त (1.19) व वरुण सूक्त (1.25)	42-58
4	सूर्य सूक्त (1.115)	59-66
5	अग्नि सूक्त (1.143)	67-75
6	विष्णु सूक्त (1.154)	76-82
7	इन्द्र सूक्त (2.12)	83-95
8	उषस् सूक्त (3.61)	96-104
9	सविता सूक्त (4.54)	105-111
10	पर्जन्य सूक्त (5.83)	112-120
11	वास्तोष्पति सूक्त (7.54)	121-125
12	यम सूक्त (10.14)	126-137
13	पुरुष सूक्त (10.90)	138-148
14	हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121)	149-158
15	वाक् सूक्त (10.125)	159-167
16	पृथ्वी सूक्त (अथर्ववेद 12.1)	168-179
17	पृथ्वी सूक्त (मन्त्र 17–32)	180-187
18	पृथ्वी सूक्त (मन्त्र 33–48)	188-196
19	पृथ्वी सूक्त (मन्त्र 49–63)	197-204
20	वैदिक स्वर प्रक्रिया व पदपाठ	105-222
21	वैदिक–लौकिक संस्कृत भाषा का परिचय	223-231

इकाई – 1
ऋग्वेद परिचय

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 वैदिक साहित्य परिचय

- स्वयं आंकलन प्रष्न

1.4 ऋग्वेद की शाखाएं, संगठन और क्रम

- स्वयं आंकलन प्रष्न

1.5 ऋग्वेद का रचना काल

- स्वयं आंकलन प्रष्न

1.6 ऋग्वेद के ऋषि संहिता

- स्वयं आंकलन प्रष्न

1.7 ऋग्वेद के छन्द

- स्वयं आंकलन प्रष्न

1.8 ऋग्वेद का वर्ण्य विषय

- स्वयं आंकलन प्रष्न

1.9 सारांश

1.10 कठिन शब्दावली

1.11स्वयं आकलन प्रष्नों के उत्तर

1.12अनुशंसित ग्रन्थ

1.13 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

वेद समस्त सृष्टि के सर्वस्व हैं। विश्व कल्याणार्थ चार वेद हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। वेद मानव जाति सहित समस्त प्राणी जगत् को सुखमय बनाने का एकमात्र साधन है अर्थात् वेद ज्ञान से ही मनुष्य सुख और शान्ति एवं लोक–परलोक को सुखी करता है। लोक–परलोक से सम्बन्धित समस्त क्रिया–कलापों का समावेश वेद में मिलता है। सृष्टि कल्याणार्थ ऐसा कोई विषय नहीं है जो वेद में

एम. ए. द्वितीय सत्र पाठ्यक्रम – **MSKTC-204**

संस्कृत
व्याकरण
(कृदन्त प्रकरण से लेकर अन्त तक तथा कारक प्रकरण)
इकाई 1-20

सम्पादक: डॉ. देवराज

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका

इकाई क्रमांक	इकाई	पृष्ठ संख्या
प्रथम इकाई	पूर्वकृदन्त-1	2-15
द्वितीय इकाई	पूर्वकृदन्त-2	16-45
तृतीय इकाई	पूर्वकृदन्त-3	46-65
चतुर्थ इकाई	पूर्वकृदन्त-4	66-88
पञ्चम इकाई	उत्तरकृदन्त-1	89-97
षष्ठ इकाई	उत्तरकृदन्त-2	98-107
सप्तम इकाई	उत्तरकृदन्त-3	108-121
अष्टम इकाई	उत्तरकृदन्त-4	122-134
नवम इकाई	समास-1	135-152
दशम इकाई	समास-2	153-168
एकादश इकाई	समास-3	169-176
द्वादश इकाई	समास-4	177-181
त्रयोदश इकाई	तद्धित-1	182-193
चतुर्दश इकाई	तद्धित-2	194-203
पञ्चदश इकाई	स्त्रीप्रत्यय-1	204-221
षोडश इकाई	स्त्रीप्रत्यय-2	222-228
सप्तदश इकाई	कारक प्रकरण- प्रथमा व द्वितीया विभक्ति	229-237
अष्टादश इकाई	कारक प्रकरण- तृतीया व चतुर्थ विभक्ति	238-243
नवदश इकाई	कारकप्रकरण-पञ्चमी व षष्ठी विभक्ति	244-250
विंशतिः इकाई	कारक प्रकरण- सप्तमी विभक्ति	251-254

प्रथम इकाई
पूर्वकृदन्त-1

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 वर्णित प्रत्यय

1.4 लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कृदन्तप्रकरण के 769 से 786 सूत्रों की उदाहरण सहित सिद्धि

- स्वयं आकलन प्रश्न

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्दावली

1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.8 सहायक ग्रन्थ

1.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, प्रथम सत्र में आपने नाटक तथा काव्य के विषय में अध्ययन किया, जिसके अन्तर्गत आपने उत्तररामचरित नाटक और नैषधीयचरित महाकाव्य को पढ़ा। इसके अतिरिक्त आपने कादम्बरी, साहित्यदर्पण, तर्कभाषा और साँख्य तथा वेदान्त का भी अध्ययन किया। इस सत्र के अष्टम पत्र में हम वरदराजकृत लघुसिद्धान्तकौमुदी के कृदन्त प्रकरण से लेकर अन्त तक तथा वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी में वर्णित कारक प्रकरण का अध्ययन करेंगे। इस पाठ में पूर्वकृदन्त प्रकरण के अन्तर्गत कृत् संज्ञा, तव्यत्, अनीयर्, केलिमर्, यत्, क्यप्, तथा ण्यत् प्रत्यय का अध्ययन किया जायेगा। धातु में जिस प्रत्यय को जोड़कर संज्ञा, विशेषण या अव्यय बनता है, उसको कृत् प्रत्यय कहते हैं और उसके द्वारा जो शब्द सिद्ध होता है उसको कृदन्त कहते हैं। जैसे- कृ धातु से तृच् प्रत्यय जोड़कर कर्तृ शब्द बना। यहाँ पर तृच् (कृत्) प्रत्यय है और कर्तृ कृदन्त शब्द है। इस अध्याय में लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित सूत्रों को उदाहरण सहित वर्णित करने का प्रयास किया जा रहा है।

1.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप जानने में समर्थ होंगे-

- लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित सूत्रों का अर्थ।
- धातु के साथ प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाने में सक्षम हो जायेंगे।
- किसी शब्द को बनाने में प्रयुक्त प्रत्ययों और सूत्रों को जानने में सक्षम हो जायेंगे।

एम. ए. प्रथम सत्र पाठ्यक्रम – **MSKTC-101**

संस्कृत
नाटक तथा काव्य
इकाई 1-22

सम्पादक: डॉ. देवराज

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका

			पृ. संख्या
प्रथम अध्याय	इकाई – 1	भवभूति का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व	3-10
द्वितीय अध्याय	इकाई – 2	भवभूति की कृतियाँ	11-19
तृतीय अध्याय	इकाई – 3	उत्तररामचरित की नाट्यकला	20-32
चतुर्थ अध्याय	इकाई – 4	उत्तररामचरित प्रथम अङ्क	33-47
पञ्चम अध्याय	इकाई – 5	उत्तररामचरित द्वितीय अङ्क	48-58
षष्ठ अध्याय	इकाई – 6	उत्तररामचरित तृतीय अङ्क	59-73
सप्तम अध्याय	इकाई – 7	उत्तररामचरित चतुर्थ अङ्क	74-83
अष्टम अध्याय	इकाई – 8	उत्तररामचरित पञ्चम अङ्क	84-94
नवम अध्याय	इकाई – 9	उत्तररामचरित षष्ठम अङ्क	95-106
दशम अध्याय	इकाई – 10	उत्तररामचरित सप्तम अङ्क	107-114
एकादश अध्याय	इकाई – 11	श्रीहर्ष का परिचय	115-121
द्वादश अध्याय	इकाई – 12	नैषधीयचरित	122-131
त्रयोदश अध्याय	इकाई – 13	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 1-15)	132-142
चतुर्दश अध्याय	इकाई – 14	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 16-30)	143-153
पञ्चदश अध्याय	इकाई – 15	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 31-45)	154-163
षोडश अध्याय	इकाई – 16	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 46-60)	164-173
सप्तदश अध्याय	इकाई – 17	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 61-75)	174-183
अष्टादश अध्याय	इकाई – 18	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 76-90)	184-193
नवदश अध्याय	इकाई – 19	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 91-105)	194-203
विंशति अध्याय	इकाई – 20	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 106-120)	204-213
एक विंशति अध्याय	इकाई – 21	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 121-135)	214-222
द्वाविशंति अध्याय	इकाई – 22	नैषधीयचरित : प्रथम सर्ग (पद्य 136-145)	223-229

प्रथम अध्याय

इकाई 1

भवभूति का व्यक्तित्व एव कर्त्तृत्व

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 भवभूति का जीवन परिचय

1.3.1 भवभूति का समय

- स्वयं आकलन अभ्यास प्रश्न-1

1.4 भवभूति की प्रकृति

- स्वयं आकलन अभ्यास प्रश्न-2

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्दावली

1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.8 सहायक ग्रन्थ

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों, इससे पूर्व स्नातक स्तर की कक्षा में आपने संस्कृत के विभिन्न कवियों के विषय में पढ़ा होगा। इन कवियों में प्रमुखतया भास, कालिदास, बाणभट्ट, सुबन्धु, दण्डी और अम्बिकादत्त व्यास है। स्नातकोत्तर स्तर की कक्षा में आपको प्रथम पत्र 'नाटक तथा काव्य' का है। जिसके अन्तर्गत आपको नाटक में भवभूति कृत 'उत्तररामचरित' तथा काव्य में श्रीहर्ष चरित 'नैषधीयचरित' महाकाव्य निर्धारित किया गया है। नैषधीयचरित महाकाव्य और उसके रचयिता पर अगली इकाईयों में वर्णन किया जायेगा। इस इकाई में उत्तररामचरित के रचयिता भवभूति के व्यक्तित्व और कर्त्तृत्व पर प्रकाश डाला जायेगा। भवभूति को संस्कृत नाट्य सहित्य में युग-परिवर्तन करने वाला प्रतिभाशाली कवि कहा जाता है, जिन्होंने कई दृष्टियों में कालिदास को भी पीछे छोड़ दिया है। वह अपने युग के सशक्त एवं विशिष्ट नाटककार थे। उस युग के आलोचक उनकी प्रतिभा का वास्तविक मूल्यांकन उपस्थित करनें में असमर्थ रहे, फलतः कवि के मन में

एम०ए० संस्कृत प्रथम सत्र पाठ्यक्रम –MSKTC-102

संस्कृत

गद्य काव्य तथा साहित्यालोचन

इकाई 1-23

डॉ० सपना चन्देल

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका		पृ. संख्या
इकाई -1	संस्कृत गद्य-साहित्य : उद्भव एवं विकास	2-18
इकाई -2	बाणभट्ट का जीवन परिचय : काल एवं कृतित्व	19-27
इकाई -3	बाणभट्ट का काव्य-सौष्ठव	28-34
इकाई -4	महाकवि बाणभट्ट से सम्बन्धित प्रसिद्ध उक्तियाँ	35-49
इकाई -5	कादम्बरी कथामुख	50-61
इकाई -6	राजा शूद्रक वर्णन	62-76
इकाई -7	चाण्डाल कन्या वर्णन	77-91
इकाई -8	शुक परिचय एवं शूद्रक दिनचर्या वर्णन	92-105
इकाई -9	शूद्रक नित्य-कृत्य वर्णन	106-112
इकाई -10	विन्ध्याटवी एवं अगस्त्य आश्रम वर्णन	113-124
इकाई -11	पम्पा सरोवर एवं शाल्मलीतरु वर्णन	125-134
इकाई -12	शुक वर्णन	135-146
इकाई -13	शबर सैन्य वर्णन	147-159
इकाई -14	शुक-शावक वर्णन	160-170
इकाई -15	हारीत वर्णन	171-188
इकाई -16	जाबालि वर्णन	189-212
इकाई -17	आचार्य विश्वनाथ एवं साहित्यदर्पण का परिचय	213-220
इकाई -18	काव्य लक्षण	221-231
इकाई -19	वाक्य, महावाक्य, पद एवं शब्द शक्तियों के लक्षण	232-241
इकाई -20	शब्द शक्तियाँ	242-248
इकाई -21	रस सिद्धान्त	249-260
इकाई -22	रस के आवश्यक तत्त्व	261-266
इकाई -23	रस	267-277

इकाई-1
संस्कृत गद्य-साहित्य : उद्भव एवं विकास

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 संस्कृत गद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास

1.3.1 महाकवि बाणभट्ट के पूर्ववर्ती गद्यकार

1.3.2 महाकवि बाणभट्ट के परवर्ती गद्यकार

- स्वयं आकलन प्रश्न

1.4 सारांश

1.5 कठिन शब्दावली

1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सहायक ग्रन्थ

1.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

स्नातकोत्तर द्वितीय सत्र प्रश्न पत्र गद्य काव्य तथा साहित्यालोचन से सम्बन्धित यह प्रथम इकाई है। वैदिक साहित्य में गद्य साहित्य का रूप उनमें वर्णित आख्यानों में दिखाई पड़ता है। इन आख्यानों में गद्य के साथ पद्य का भी भाग मिलता है जिसे 'गाथा' कहते है। ऋग्वेद में 'नाराशंसी' गाथाओं का उल्लेख मिलता है। वैदिक गद्य में छोटे-छोटे सरल एवं सुबोध शब्दों का प्रयोग है। संस्कृत गद्य का आरम्भ ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों के गद्य में देखा जा सकता है। आरम्भिक शिलालेखों में गद्य-काव्य प्राप्त होते हैं। रूद्रदमन का गिरनार शिलालेख तथा हरिषेण रचित समुद्रगुप्त प्रशस्ति महत्वपूर्ण गद्यकाव्य के उत्तम उदाहरण है। पद्य की अपेक्षा गद्य काव्य की रचना बहुत कम हुई है। परन्तु जितना भी गद्यकाव्य प्राप्य है वह उत्तम श्रेणी का है। इस इकाई में आप संस्कृत गद्य काव्य की परम्परा का उद्भव, विकास, गद्यकाव्य के भेद, प्रमुख गद्य काव्यकारों का परिचय तथा आधुनिक संस्कृत गद्यकाव्य के बारे में अध्ययन करेंगे।

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप संस्कृत गद्य काव्य की परम्परा का उद्भव किस प्रकार हुआ। साथ ही गद्यकाव्य के विकास क्रम के विषय में विस्तार से विश्लेषण कर सकेंगे।

एम. ए. संस्कृत - प्रथम षाण्मासिकी

पाठ्यक्रम - 3

MSKT-103 न्याय-वैशेषिक **Course Credit : 6** **कुल अंक - 80**

तर्कभाषा

इकाई 1-20

सम्पादक - डॉ. अश्वनी कुमार

दूरवर्ती शिक्षा एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,

समरहिल, शिमला - 171005

विषयानुक्रमणिका

विषय क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
विषयानुक्रमणिका		
इकाई – एक	अनुबन्धचतुष्ट्य और न्यायशास्त्र की त्रिविध प्रवृत्ति	1 - 8
इकाई - दो	प्रमाण और कारण	9 - 20
इकाई - तीन	समवायिकारण, असमवायिकारण और निमित्तकारण	21 - 32
इकाई - चार	प्रत्यक्ष प्रमाण निरूपण	33 - 46
इकाई - पाँच	अनुमाण प्रमाण निरूपण	47 - 58
इकाई - छः	त्रिविध हेतु - अन्वयव्यतिरेकी, केवलव्यतिरेकी और केवलान्वयी	59 - 71
इकाई - सात	हेत्वाभास और उसके भेद	72 - 80
इकाई - आठ	उपमान और शब्द प्रमाण निरूपण	81 - 91
इकाई - नौ	अर्थापत्ति और अभाव प्रमाण निरूपण	92 - 103
इकाई - दस	प्रामाण्यवाद निरूपण और ज्ञातता	104 - 116
इकाई - ग्यारह	प्रमेयनिरूपण	117 - 129
इकाई - बारह	अर्थ निरूपण	130 - 137
इकाई - तेरह	कार्यद्रव्यों की उत्पत्ति और विनाशक्रम	138 - 145
इकाई - चौदह	द्रव्य और गुण निरूपण	146 - 160
इकाई - पन्द्रह	गुण निरूपण	161 - 173
इकाई - सोलह	गुण, कर्म और सामान्य निरूपण	174 - 182
इकाई - सत्रह	अर्थ और बुद्धि निरूपण	183 - 192
इकाई - अट्ठारह	मन आदि प्रमेय तथा संशयादि पदार्थ निरूपण	193 - 203
इकाई – उन्नीस	तर्कादि पदार्थ निरूपण	204 - 213
इकाई – बीस	हेत्वाभास - भेदादि पदार्थ निरूपण	214 - 223

इकाई - एक

अनुबन्धचतुष्ट्य, न्यायशास्त्र की त्रिविध प्रवृत्ति

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 अनुबन्ध चतुष्टय का अर्थ

- 1.3.1 वेदान्तसार के अनुसार अनुबन्ध चतुष्टय
- 1.3.2 कोशग्रंथ वाचस्पत्यम् में अनुबन्ध चतुष्टय
- 1.3.3 कुमारिल भट्ट के अनुसार अनुबन्ध चतुष्टय
- 1.3.4 भक्तमाल में अनुबन्ध चतुष्टय
- 1.3.5 गीता में अनुबन्ध चतुष्टय
- 1.3.6 कुमारिल भट्ट के अनुसार अनुबन्ध चतुष्टय
- • स्वयं आकलन अभ्यास प्रश्न-1

1.4 न्यायशास्त्र की त्रिविध प्रवृत्ति

- 1.5.1 उद्देश
- 1.5.2 लक्षण
- 1.5.3 परीक्षा
- • स्वयं आकलन अभ्यास प्रश्न-2

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्दावली

1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.8 सहायक ग्रन्थ

1.9 अभ्यास हेतु दीर्घ प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो, इस इकाई में केशव मिश्र ने यह स्पष्ट किया है कि तर्कभाषा ग्रन्थ को क्यों पढ़ना चाहिए? इसके बाद उन्होंने स्पष्ट किया है कि अनुबन्ध चतुष्टय क्या होता है और जानकारी होने से हमें क्या प्राप्त होता है। इसके साथ-साथ सोलह पदार्थ कौन से हैं और शास्त्र की तीन प्रकार की प्रवृत्ति, लक्षण से अभिप्राय और उसके दोष तथा प्रमाण पदार्थों का परिचय दिया गया है।

कोर्सकोड–**MSKTC-104**
(CBCS)

पाठ्यक्रम–चतुर्थ

एम०ए०संस्कृत, प्रथमसत्र

सांख्य तथा वेदान्त

इकाई1 से22

लेखक : डॉ. दीपलता

दूरवर्ती शिक्षा एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
समरहिल, शिमला - 171005

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	इकाई	विषय	पृष्ठ संख्या
1	प्रथम	सांख्यदर्शन : एक परिचय	1–14
2	द्वितीय	इन्द्रिय महतादितत्त्वएवंसत्कार्यवाद	15–26
3	तृतीय	त्रिगुण, व्यक्त–अव्यक्त एवंप्रकृतिऔरपुरुष	27–39
4	चतुर्थ	कैवल्य, पुरुष प्रकृतिसंयोगतथाप्रमेय	40–49
5	पंचम्	इन्द्रिय ज्ञान एवंपंचतन्मात्रा ज्ञान	50–56
6	षष्ठ	करण एवंबुद्धि तत्त्व	57–66
7	सप्तम्	तत्त्वसृष्टि एवं शरीरविवेचन	67–75
8	अष्टम्	प्रत्यय सृष्टि	76–84
9	नवम्	तुष्टि एवंसिद्धि विवेचन	85–93
10	दशम्	प्रकृति–पुरुष विवेचन	94–100
11	एकादश	जीवात्माबन्धनमोक्ष	101–109
12	द्वादश	कैवल्य स्वरूप	110–117
13	त्रयोदश	वेदान्तसार : एक परिचय	118–136
14	चतुर्दश	प्रयोजन, समष्टि–व्यष्टि	137–156
15	पंचदश	सृष्टिप्रक्रिया	157–168
16	षोड्श	सूक्ष्म एवंस्थूल शरीर	169–181
17	सप्तदश	अध्यारोप एवंअपवाद	182–198
18	अष्टादश	महावाक्य	199–205
19	एकोनविंशति	तत्त्वमसि	206–216
20	विंशति	षड्लिंग	217–226
21	एकविंशति	समाधि	227–236
22	द्वाविंशति	जीवन्मुक्ति	237–249

प्रथम इकाई

सांख्यदर्षन : एक परिचय

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3सांख्यकारिका

1.3.1 दर्षन एवं सांख्यदर्षन का वर्णन

1.3.2 सांख्यदर्षन का मूल उद्देष्य

- स्वयं आंकलन प्रष्न – 1

1.4सांख्यकारिका के रचयिता एवं उनका स्थितिकाल

- स्वयं आंकलन प्रष्न – 2

1.5 सांख्यकारिका व्याख्या सहित (1 से 6 कारिका तक)

- स्वयं आंकलन प्रष्न – 3

1.6 सारांष

1.7 कठिन शब्दावली

1.8 स्वयं आकलन प्रष्नों के उत्तर

1.9 अनुषंसित ग्रन्थ

1.10 अभ्यास प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

दार्शनिक अरस्तु का कथन है–"Philosophy begins in Wonder"अर्थात् ''दर्शन का प्रारम्भ आश्चर्य से होता है। वस्तुतः इस अद्भुत संसार के क्रिया–कलापों को देखकर मानव मस्तिष्क चकित रह जाता है तथा वह यह विचार करने के लिए बाध्य हो जाता है कि इस सुप्रतिष्ठित एवं सुव्यवस्थित जगत् का कर्त्ता कौन है? यह विश्व कहां से आया है? हम कहां से आये हैं? यथार्थ सत्ता क्या है? आदि। इसी प्रकार के अगणित विस्मयकारी प्रश्नों के समाधानार्थ मानव–मस्तिष्क अनवरत रूप से विचारशील रहता है। निरन्तर चिन्तन की इस कला का नाम ही दर्शन है।

1.2 उद्देश्य

- सृष्टि के कल्याणार्थ

एम. ए. द्वितीय सत्र पाठ्यक्रम – **MSKTC-202**

संस्कृत
निरुक्त तथा उपनिषद
इकाई **1-21**

सम्पादक: रेणुका शर्मा

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका पृ. संख्या

- इकाई 1 यास्क का परिचय तथा निरुक्त की उपयोगिता 3-12
  इकाई 2 निघण्टु एवं पद विभाग 13-21
- इकाई 3 भावविकार 22-31
- इकाई 4 उपसर्ग निरुपण 32-40
- इकाई 5 निपात विवेचन 41-50
- इकाई 6 वेद मन्त्रों की सार्थकता एवं निरुक्त प्रयोजन 51-59
- इकाई 7 निर्वचन सिद्धान्त 60-71
- इकाई 8 ऋचा के प्रकार 72-81
- इकाई 9 देवता के प्रकार 82-92
- इकाई 10 सप्तम अध्याय में प्रयुक्त पदो की समीक्षा 93-101
- इकाई 11 ईशावास्योपनिषद् का सार एवं महत्व 102-111
- इकाई 12 ईश्वर की सर्वव्यापकता 112-121
- इकाई 13 आत्मा का स्वरुप 122-133
- इकाई 14 विद्या और अविद्या का रहस्य 134-142
- इकाई 15 सम्भूति और असम्भूति की उपासनाओं का रहस्य 143-150
- इकाई 16 आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना 151-160
- इकाई 17 तैत्तिरीयोपनिषद् का सार एवं महत्व 161-167
- इकाई 18 तैत्तिरीयोपनिषद् से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न 168-177
- इकाई 19 शीक्षावल्ली 178-187
- इकाई 20 ब्रह्मानंद वल्ली 188-197
- इकाई 21 भृगु-वल्ली 198-207

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम पृष्ठ	निरूक्त तथा उपनिषद्
क) : यास्क निरूक्त ; प्रथम, द्वितीय सप्तम अध्याय	40अंक
ख) : ईशावास्योपनिषद्	20 अंक
ग) : तैत्तिरीयोपनिषद्.	20अंक

इकाई 1
यास्क का परिचय तथा निरुक्त की उपयोगिता

संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 यास्क का परिचय
    1.3.1 यास्क का काल
- स्वयं आकलन प्रश्न
1.4 निरुक्त की उपयोगिता
- स्वयं आकलन प्रश्न
1.5 सारांश
1.6 कठिन शब्दावली
1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
1.8 सहायक ग्रन्थ
1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

यास्क के योगदान ने वैदिक साहित्य और भारतीय दर्शन के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वेदों के अर्थ और उनके संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए यास्क ने 'निरुक्त' की रचना की, जो कि संस्कृत के प्राचीनतम और महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रंथों में से एक है। प्रस्तुत इकाई में महर्षि यास्क द्वारा लिखित निरुक्त के प्रथम अध्याय में वर्णित सर्वप्रथम आचार्य यास्क के परिचय के साथ-साथ निरुक्त की उपयोगिता, इत्यादि विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। यद्यपि निरुक्त में यास्क ने मुख्यरूप से पद-विभाग को ही वर्णित किया है किन्तु इसके अन्तर्गत बहुत से अवान्तर विषयों का भी इसमें समावेश किया गया है। इसके अतिरिक्त इस इकाई में आपके उपर्युक्त विषयों के साथ साथ परीक्षा के उपयोगी प्रश्न एवं उनके उत्तर भी प्राप्त होंगे। वस्तुतः वैदिक साहित्य में वेदांगों के अन्तर्गत निरुक्त नामक वेदांग का स्थान महत्त्वपूर्ण है। निरुक्त वेदरूपी पुरुष का श्रोत्र कहा जाता है। जिस प्रकार कानों के बिना हम सुन नहीं सकते , उसी प्रकार बिना निरुक्त के वेदार्थ को समझना भी अतीव कठिन है। अतः प्रस्तुत पाठ में निरुक्त के प्रथम अध्याय में वर्णित विषय पर ही विशेषरूप से चर्चा की जा रही है।इसका भरपूर लाभ पाठकों को होगा।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के मुख्य उद्देश्य है--

•निरुक्त के विषय में ज्ञान प्राप्त कराना।

•वैदिक शब्दों के दुरूह अर्थ को स्पष्ट कराना।

एम. ए. द्वितीय सत्र

पाठ्यक्रम – **MSKT-202**

संस्कृत
निरुक्त तथा उपनिषद
इकाई **1-21**

सम्पादक: रेणुका शर्मा

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका पृ. संख्या

इकाई 1	यास्क का परिचय तथा निरुक्त की उपयोगिता	3-12
इकाई 2	निघण्टु एवं पद विभाग	13-21
इकाई 3	भावविकार	22-31
इकाई 4	उपसर्ग निरुपण	32-40
इकाई 5	निपात विवेचन	41-50
इकाई 6	वेद मन्त्रों की सार्थकता एवं निरुक्त प्रयोजन	51-59
इकाई 7	निर्वचन सिद्धान्त	60-71
इकाई 8	ऋचा के प्रकार	72-81
इकाई 9	देवता के प्रकार	82-92
इकाई 10	सप्तम अध्याय में प्रयुक्त पदो की समीक्षा	93-101
इकाई 11	ईशावास्योपनिषद् का सार एवं महत्व	102-111
इकाई 12	ईश्वर की सर्वव्यापकता	112-121
इकाई 13	आत्मा का स्वरुप	122-133
इकाई 14	विद्या और अविद्या का रहस्य	134-142
इकाई 15	सम्भूति और असम्भूति की उपासनाओं का रहस्य	143-150
इकाई 16	आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना	151-160
इकाई 17	तैत्तिरीयोपनिषद् का सार एवं महत्व	161-167
इकाई 18	तैत्तिरीयोपनिषद् से संबंधित समीक्षात्मक प्रश्न	168-177
इकाई 19	शीक्षावल्ली	178-187
इकाई 20	ब्रह्मानंद वल्ली	188-197
इकाई 21	भृगु-वल्ली	198-207

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम पृष्ठ	निरूक्त तथा उपनिषद्
क) : यास्क निरूक्त ; प्रथम, द्वितीय सप्तम अध्याय	40अंक
ख) : ईशावास्योपनिषद्	20 अंक
ग) : तैत्तिरीयोपनिषद्.	20अंक

इकाई 1
यास्क का परिचय तथा निरुक्त की उपयोगिता

संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 यास्क का परिचय
1.3.1 यास्क का काल
- स्वयं आकलन प्रश्न
1.4 निरुक्त की उपयोगिता
- स्वयं आकलन प्रश्न
1.5 सारांश
1.6 कठिन शब्दावली
1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
1.8 सहायक ग्रन्थ
1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

यास्क के योगदान ने वैदिक साहित्य और भारतीय दर्शन के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वेदों के अर्थ और उनके संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए यास्क ने 'निरुक्त' की रचना की, जो कि संस्कृत के प्राचीनतम और महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रंथों में से एक है। प्रस्तुत इकाई में महर्षि यास्क द्वारा लिखित निरुक्त के प्रथम अध्याय में वर्णित सर्वप्रथम आचार्य यास्क के परिचय के साथ-साथ निरुक्त की उपयोगिता, इत्यादि विषयों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। यद्यपि निरुक्त में यास्क ने मुख्यरूप से पद-विभाग को ही वर्णित किया है किन्तु इसके अन्तर्गत बहुत से अवान्तर विषयों का भी इसमें समावेश किया गया है। इसके अतिरिक्त इस इकाई में आपके उपर्युक्त विषयों के साथ साथ परीक्षा के उपयोगी प्रश्न एवं उनके उत्तर भी प्राप्त होंगे। वस्तुतः वैदिक साहित्य में वेदांगों के अन्तर्गत निरुक्त नामक वेदांग का स्थान महत्त्वपूर्ण है। निरुक्त वेदरूपी पुरुष का श्रोत्र कहा जाता है। जिस प्रकार कानों के बिना हम सुन नहीं सकते , उसी प्रकार बिना निरुक्त के वेदार्थ को समझना भी अतीव कठिन है। अतः प्रस्तुत पाठ में निरुक्त के प्रथम अध्याय में वर्णित विषय पर ही विशेषरूप से चर्चा की जा रही है।इसका भरपूर लाभ पाठकों को होगा।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के मुख्य उद्देश्य है--

•निरुक्त के विषय में ज्ञान प्राप्त कराना।

एम. ए. द्वितीय सत्र   पाठ्यक्रम – **MSKTC-203**

संस्कृत
व्याकरण
(लघुसिद्धान्त कौमुदी - प्रारम्भ से लेकर तिङ्न्त प्रकरण तक)
इकाई 1-20

सम्पादक: डॉ. भानु शर्मा

दूरवर्ती एवं ऑनलाइन शिक्षा केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला - 5

विषयानुक्रमणिका		पृ. संख्या
इकाई -1	सञ्ज्ञा प्रकरण	2-18
इकाई-2	अच्सन्धि प्रकरण	19-41
इकाई-3	हल्सन्धि प्रकरण	42-67
इकाई-4	विसर्ग सन्धि प्रकरण	68-78
इकाई-5	अकारान्त तथा आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द (अजन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	79-102
इकाई-6	इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द (अजन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	103-118
इकाई-7	ईकारान्त-ऊकारान्त- ऋकारान्त-ओकारान्त-ऐकारान्त शब्द (अजन्त पुं.प्रकरण)	119-132
इकाई-8	अजन्त स्त्रीलङ्ग प्रकरण	133-145
इकाई-9	अजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण	146-157
इकाई-10	हकारान्त-वकारान्त-रेफान्त-मकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	158-177
इकाई-11	नकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	178-193
इकाई-12	दकारान्त, जकारान्त तथा चकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	194-221
इकाई-13	तकारान्त, शकारान्त, षकारान्त, सकारान्त शब्द (हलन्त पुंल्लिङ्ग प्रकरण)	222-237
इकाई-14	हलन्त स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग शब्द	238-249
इकाई-15	भ्वादि गण- भू धातु	250-280
इकाई-16	भ्वादि गण- अन्य परस्मैपदी धातुएं	281-304
इकाई-17	भ्वादि गण- आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुएं	305-324
इकाई-18	अदादि गण	325-351
इकाई-19	जुहोत्यादि-दिवादि-स्वादि गण	352-372
इकाई-20	रुधादिगण से चुरादि गण	373-400
परिशिष्ट		401-413

इकाई-1

सञ्ज्ञाप्रकरण

संरचना

1.1. पाठ का परिचय
1.2. पाठ का उद्देश्य
1.3. मङ्गलाचरण तथा वर्ण परिचय
  1.3.1. मङ्गल श्लोक
  1.3.2. वर्ण परिचय
   - स्वयं आकलन प्रश्न-1
1.4. इत् सञ्ज्ञा तथा प्रत्याहार
  1.4.1. इत् सञ्ज्ञा
  1.4.2. लोप सञ्ज्ञा
  1.4.3. लोप विधान
  1.4.4. प्रत्याहार
   - स्वयं आकलन प्रश्न-2
1.5. वर्णों के भेद
  1.5.1. ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत सञ्ज्ञा
  1.5.2. उदात्त सञ्ज्ञा
  1.5.3. अनुदात्त सञ्ज्ञा
  1.5.4. स्वरित सञ्ज्ञा
  1.5.5. अनुनासिक सञ्ज्ञा
   - स्वयं आकलन प्रश्न-3
1.6. वर्णों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न
  1.6.1. उच्चारण स्थान
  1.6.2. प्रयत्न- आभ्यन्तर, बाह्य
  1.6.3. सवर्ण सञ्ज्ञा
  1.6.4. सवर्ण ग्रहण
   - स्वयं आकलन प्रश्न-4
1.7. अन्य सञ्ज्ञाएं
  1.7.1. संहिता सञ्ज्ञा
  1.7.2. संयोग सञ्ज्ञा
  1.7.3. पद सञ्ज्ञा